समकालीन भारतीय साहित्य : विविध विमर्श

विविध विधाओं के संदर्भ में

भाग -१

प्रधान संपादक

प्रो. सीताराम के. पवार

सह संपादक

प्रो. प्रभा भट्ट

डॉ. एल. पी. लमाणी

डॉ. शीला. चौगुले

डॉ. नीता दौलतकर

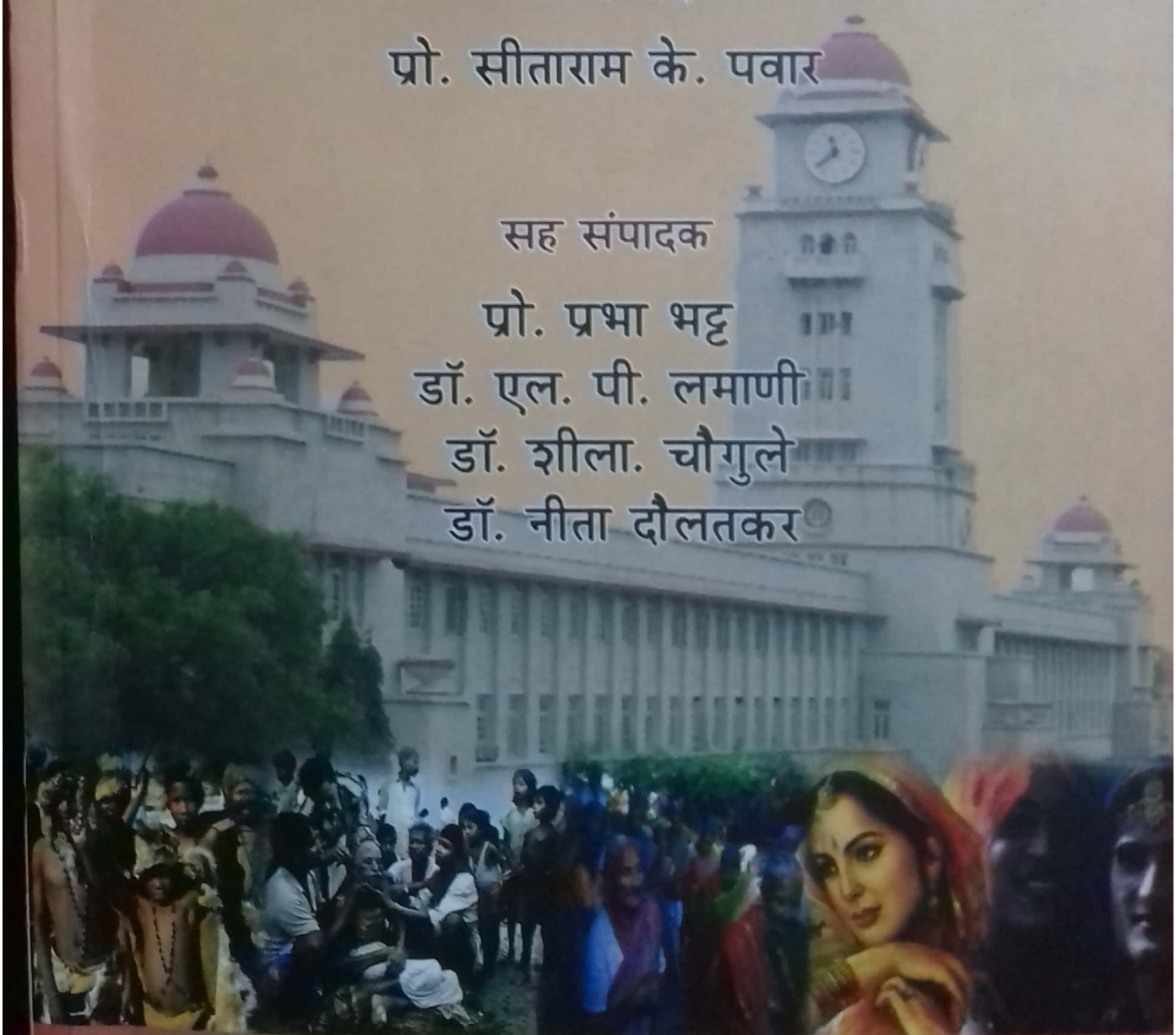

हिन्दी विभाग, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड

Scanned with CamScanner

समकालीन हिन्दी साहित्य : विविध विमर्श

(Collective Essays Presented at International Conference on "Diverse Criticism in Contemporary Indian Literature)

प्रधान संपादक : प्रो. सीताराम के. पवार

© : प्रधान संपादक

प्रकाशक : अमन प्रकाशन कानपुर

मुद्रक : सरस्वति प्रिंटर्स, धारवाड

वर्ष : २०१८

पृष्ट : ६३१+१२

ISBN : 978-93-86604-74-3

मूल्य : ३००

प्रतियाँ : ३००

सभी हक सुरक्षित है ।

प्रस्तुत पुस्तक में प्रकाशित आलेख, विभिन्न विचार, आदि लेखक के हैं । अतः संपादक, संपादक मंडल, मुद्रक तथा प्रकाशन इसके लिए जिम्मेदार नहीं है ।

Scanned with CamScanner

142.	समकालीन हिन्दी साहित्य में किन्नर विमर्श	डॉ. रविंद्र ल. [illegible]	416
143.	स्त्री पक्ष के दमदार लेखक	अमित कुमार	418
144.	हिंदी स्त्रीवादी कविताओं में आर्थिक सत्ता से वंचित स्त्री	गीतांजली साहू	420
145.	स्त्री विमर्श औपन्यासिक संदर्भ में	अनीता .एम .बेलगांवकर	422
146.	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में दलित स्त्री-पुरुष के संघर्षमय जीवन	डॉ. बी. एन. गुंडूर	424
147.	समकालीन हिन्दी उपन्यास और दलित विमर्श	डॉ. ताक एस.पवार	427
148.	दलितों का आर्थिक जीवन	डा० रीना प्रताप सिंह	429
149.	भोजपुरी लोकगीत में नारी - केशव मोहन पाण्डेय	Mr. Viraj. Vishwas. Modi.	431
150.	समकालीनहिंदी कहानियोंमेंस्त्रीविमर्श	प्रवीण काकडे	433
151.	पंखुरी सिन्हा कृत कहानी 'किस्सा-ए-कोहिनूर' में समकालीनता	डॉ. जाकीर हुसैन गुलगुंदी	435
152.	अस्मिता को तलाशती 21वीं सदी के महिला कहानीकार	वनजा तालदी	438
153.	'बहू' कहानी में व्यक्त दलित स्त्री की जीवन	डॉ. के.एस.सुधा अनंतपद्मनाभ	440
154.	हिंदी आत्मकथा साहित्य में नारी विमर्श ('दोहरा अभिशाप' के संदर्भ में)	डॉ. आर.ए.कमलाकर	442
155.	डा: सविता सिंह के कविताओं में स्त्री विमर्श	Dr. Madhumalati G.S.	444
156.	रामदरश मिश्र के उपन्यास साहित्य में चित्रित ग्रामीण जीवन	डॉ.प्रभावती ह.शाखापुरे	446
157.	प्रवासी कवयित्रियों का देश - प्रेम	अनुपमा तिवारी	448
158.	हिन्दी उपन्यासों में वृद्ध विमर्श	डॉ.(श्रीमति) शीला म. भंडारि	450
159.	दलित विमर्श	Sudeshna K.	452
160.	दलित विमर्श	डॉ.किरण.बि.कामाटि	454
161.	समकालीन हिन्दी विमर्श : आदिवासी विमर्श	डा. भारती टेंच. दोड्डमनी.	456
162.	समकालीन हिन्दी साहित्य में दलित विमर्श-	रामकली शर्मा	458
163.	बालमणियममा काव्य कला एवं दर्शन में रति सक्सेनाजी का दलित विमर्श।	अर्चना शेट्टी के	460
164.	समकालीन हिन्दी साहित्य : वृद्ध विमर्श	डॉ. उदय कुमार बी.	462
165.	डॉ. बालशौरी रेड्डी जी के लकुमा उपन्यास में चित्रित नारी	डा. [illegible]	464
166.	स्त्री विमर्श	Ishrat Jahan Buruj	466
167.	समकालीन हिंदी कविताओं में स्त्री विमर्श	गिरिजादेवी जगतापि	467

Scanned with CamScanner

डॉ. बालशौरी रेड्डी जी के लकुमा उपन्यास में चित्रित नारी

प्रा. गंगाधर म. गेंड

भारत में नारी मुक्ति आंदोलन के आरंभ का समय निर्धारित करना कठिण है क्योंकि इसका निश्चित प्रमाण प्राप्त नहीं है। उत्तर वैदिक काल से नारी पर जैसे-जैसे बंधन जटील होने लगे वैसे-वैसे उसमें मुक्ति की कामना प्रबल होती गई। पर कुछ समय नारी के लिए नारी ने अपने जीवन की स्थितियों को अपना भाग्य स्वीकार कर लिया। मध्यकाल से नवजागरण काल तक का इतिहास इसी समझौते का प्रमाण है। नारी ने राष्ट्रीय समस्याओं को प्रारंभ से पुरूषों के साथ मिलकर ही सुलजाया। जब भारत पर आक्रमण हुए उस समय राज्य प्रशासन स्वयं संभाल कर युध्द के लिए पति और पुत्र को प्रेरित कर युध्द को भेजने वाली स्त्रियों की अनेक कहानियाँ इतिहास में मिलती है। यह नारी का त्याग-भाव दर्शाने वाली कहानी का स्वरूप है। इस प्रकार के नारी के एक-एक गुणों को लेकर उपन्यास की रचना की गई है। आदिकाल से आज तक जितना साहित्य मिलता है उसमें से तकरिबन आधे से भी ज्यादा साहित्य नारी के इर्द-गीर्द घुमता हुआ मिलता है। उसके अनेक रूपों और गुणों का वर्णन हमें पढने को मिलता है। इतना होने के बावजूद भी आज साहित्य में से नारी को वंचित नहीं किया गया है। आधुनिक काल में जितने भी उपन्यासकार हो गये हैं, उनके साहित्य में भी नारी का रूपवर्णन देखने को मिलता है। उन्ही में से एक उपन्यासकार डॉ. बालशौरी रेड्डी जी हैं। उनके पूरे उपन्यासों में जितने भी स्त्री पात्र है वे समाज के एक-एक नारी का प्रतिनिधित्व करनेवाली पात्र है। उनका उपन्यास लकुमा में ऐसे ही नारी पात्र का चित्रण किया है जो एक आदर्श गुणों की खान मानी गयी है जिसका नाम मल्लांबिका है।

'लकुमा में मल्लांबिका का चित्रण

लकुमा बालशौरी रेड्डी जी का ऐतिहासिक उपन्यास है। इस उपन्यास का पात्र महारानी मल्लांबिका आदर्श गुणों की खान है। वह साम्राट कुमारगिरी की पत्नी थी। एक सुयोग्य पत्नी एवं नारी के सभी गुण उनमें थे। पति का भी अपार प्रेम और विश्वास उन्हें प्राप्त था। उनका भाई कोंडवीडु साम्राज्य का महासेनापति था। वह सदा अपने पति के कला प्रविण चित्त के राज्य से विचलित होने से रोकती रहती थी। राजा प्राय: राज्य संरक्षण की अपेक्षा नृत्य एवं अन्य कलाओं को अधिक महत्व देते थे। प्राय: एकांतवास भी करते थे। इसमें मल्लांबिका बहुत चिंतित थी साम्राज्ञी मल्लांबिका के मन में यह संदेह होने लगा कि कहीं साम्राट ने विरक्त होकर संसार का त्याग तो नहीं कर दिया, अथवा बुध्द की भाँति तपस्या करने तो नहीं निकल गए? १

Scanned with CamScanner

राजा लकुमा के आ जाने के बाद पूरी तरह उसी की तरफ मुड गए। राजकाज से एक तरह से वैराग्य ले लिए इस संदर्भ में महारानी ने युध्द के समय स्वयं राज्य की रक्षा और व्यवस्था का भार अपने ऊपर लिया और भाई काव्य वेमा को रणरंग में भेजा। अंतत: महारानी मल्लांबिका ने राज्य रक्षा को ध्यान में रखकर लकुमा को राजा से सदा के लिए दूर कर देने का संकल्प किया। वे एकांत में उससे मिली उन्होंने लकुमा से स्पष्ट कहा कि व्यक्ति से भी समाज और देश बडा होता है। तुम्हारे कारण राजा विलासी हो गए हैं। तुम्हें सदा के लिए उनका साथ छोडना होगा। महारानी के पास अधिकार होते हुए भी वह लकुमा से मिलकर उससे कहती हैं–

सुनो बहन लकुमा में अपने दय को पत्थर बनाकर यही कहूँगी कि तुम्हें साम्राट से जैसे भी अलग होना होगा। २

स्पष्ट है कि महारानी मल्लांबिका सुयोग्य पतिवृत्ता पत्नी, कुशल महारानी, दृढसंकल्पना और कर्तव्यपरायण थीं। वे प्रेम से भी अधिक कर्तव्य को महत्व देती थी।

'लकुमा उपन्यास नायिका प्रधान उपन्यास है। इस उपन्यास की नायिका लकुमा ही है। वह देवदासी माँ की देवदासी पुत्री है। वह सुंदरी युवती एवं नृत्यकला में परांगत है और बापटला के प्रभु भावनारायण मंदिर में नियमित नृत्य करती है। उक्त मंदिर में नृत्य करते समय लकुमा का राजा कुमारगिरी का सेनापति दोरपा द्वारा हरण करके फिर उसे राजा के सम्मुख प्रस्तुत किया गया। राजा ने सेनापति की इस भेंट को नृत्यकला की परीक्षा करने के बाद स्वीकार कर लिया।

लकुमा में अपार प्रभा थी। वह राधाकृष्ण के वियोग के नृत्य में सर्प नृत्य और मयूर नृत्य का प्रस्तुति बहुत खूब ढंग से कर सकती थी। राजा के दरबार में पहले ही नृत्य के प्रभावकारी प्रदर्शन के कारण राजनर्तकी का सम्मान पा लेती है। राजा धीरे–धीरे लकुमा का रूप, लावण्य, यौवन पर मुग्ध होता गया। लकुमा में भी राजा के प्रति प्रेमभाव आकर्षण पैदा होने लगा। दोनों के बीच का प्रेम बढता ही गया। राजा अपना राजकाज, महारानी सभी को भूल गया। लकुमा पर ही अपना पूरा ध्यान केंद्रित लरने लगा। लकुमा खुद को राजा की दासी मान ली और हमेशा उसे प्रसन्न रखने की कोशिश करती रही। लकुमा का प्यार इतना गहरा था कि राजा युध्द के समय में भी रणभूमि में न जाकर लकुमा के पास ही रह गया। राजा का लकुमा पर की अतिशय आसक्ति के कारण लकुमा महामंत्री, महारानी एवं प्रजा के कुछ हद तक घृणा का शिकार भी बन गयी।

लकुमा की नृत्य भंगिमाओं के आधार पर ही राजा के नृत्यशास्त्र की रचना की राजशिल्पी सोमदेव ने लकुमा के नृत्य की विविध भंगिमा के आधार पर ही एक भव्य महल खडा कर दिया था।

Scanned with CamScanner